देवी-देवताओं की उपासना : शक्ति - खण्ड ५

श्री गंगाजी की महिमा

(आध्यात्मिक विशेषताएं एवं उपासनासहित) हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवले, हिन्दू राष्ट्र-स्थापना के उद्घोषक

सद्गुरु डॉ. चारुदत्त पिंगळे

सनातन संस्था

प्रकाशक : सनातन भारतीय संस्कृति संस्था, कक्ष क्र. १०३, सनातन आश्रम, सनातन संकुल, पोस्ट - 'ओएनजीसी', देवद, तहसील पनवेल, जनपद रायगड (महाराष्ट्र) ४१० २२१. **दू.क्र.** : (02143) 233120

प्रथम संस्करण : भगवान दत्तात्रेय जयन्ती, कलियुग वर्ष ५११४ (२७ दिसम्बर २०१२)
द्वितीय संस्करण : धनतेरस, कलियुग वर्ष ५१२६ (२९ अक्टूबर २०२४)

मूल मराठी ग्रन्थ 'गंगामाहात्म्य' का अनुवाद । यह ग्रन्थ कन्नड भाषामें भी उपलब्ध है ।

मुद्रणस्थल : प्रेस टेक प्रिंट, कोल्हापुर, महाराष्ट्र.

अर्पणमूल्य : ₹ ६०/- (₹ 60/-)
(इस संस्करणका छूटसहित अर्पणमूल्य ₹ २०/- (₹ 20/-) है ।)

ISBN 978-81-979242-1-7 ॐ **ग्रन्थ क्र.** : १९४

© **प्रकाशक** All rights are reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the original publisher. Violators will be liable for criminal / civil action.

ग्रन्थ के संकलनकर्ताओं का परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्य का संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था' की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्ति के लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्ग की निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से २०.९.२०२४ तक १२८ साधकों को सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४३ साधक सन्तत्व की दिशा में अग्रसर हैं ।

३. देवता, साधना, राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विषयों पर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिंदुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात' के संस्थापक-संपादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र की (ईश्वरीय राज्य की) स्थापना का उद्घोष (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तर पर दिशादर्शन !

७. भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार हेतु 'भारत गौरव पुरस्कार' देकर फ्रान्स के संसद में सम्मान (५ जून २०२४)

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले

१८.५.१९९६

सद्गुरु डॉ. चारुदत्त पिंगळे, एम.एस. (ई.एन.टी.)

'हिन्दू जनजागृति समिति' के राष्ट्रीय मार्गदर्शक हैं तथा भारत व नेपाल में हिन्दू राष्ट्र-स्थापना हेतु हिन्दू-संगठन कर रहे हैं । आपके नेतृत्व में प्रतिवर्ष गोवा में 'वैश्विक हिन्दू राष्ट्र महोत्सव' आयोजित किया जाता है । आप सनातन के अनेक ग्रन्थों के संकलनकर्ता भी हैं ।

अनुक्रमणिका

१.	'गंगा' शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ	६
२.	ब्रह्माण्ड में गंगा नदी की उत्पत्ति एवं भूलोक में उनका अवतरण	६
३.	गंगाजी के कुछ अन्य नाम	८
४.	विशेषताएं	९
५.	गंगाजी का महत्त्व	२२
६.	हिन्दू जीवनदर्शन में गंगोदक का स्थान	२४
७.	गंगातट के तीर्थस्थल	२६
८.	गंगास्नान तथा उसका महत्त्व	३१
९.	गंगापरिवार	३५
१०.	मूर्तिविज्ञान	३६
११.	श्रद्धालुओं के लिए आवश्यक गंगासम्बन्धी व्यष्टि साधना	३६
१२.	श्रद्धालुओं के लिए आवश्यक गंगाजीसम्बन्धी समष्टि साधना	५१
१३.	भावी हिन्दू राष्ट्र में गंगा नदी परम पवित्र होगी !	५५

भूमिका

पुण्यसलिला गंगा की महिमा अपरम्पार है ! भौगोलिक दृष्टि से गंगा नदी भारतवर्ष की हृदयरेखा है ! इतिहास की दृष्टि से प्राचीन काल से अर्वाचीनकाल तक तथा गंगोत्री से गंगासागर तक गंगा की कथा हिन्दू सभ्यता एवं संस्कृति की अमृतगाथा है । राष्ट्रीय दृष्टि से भिन्न आचार-विचार, वेशभूषा, जीवनपद्धति एवं जातियों से युक्त समाज को एकत्रित लानेवाली गंगा नदी हिन्दुस्थान की राष्ट्रीय-प्रतीक ही है । धार्मिक दृष्टि से इतिहास के उषःकाल से कोटि-कोटि हिन्दू श्रद्धालुओं को मोक्ष प्रदान करनेवाली गंगा विश्व का सर्वश्रेष्ठ तीर्थ है । आध्यात्मिक क्षेत्र में जो स्थान गीता का है, वही स्थान धार्मिक क्षेत्र में गंगा का है । प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रमुखरूप से गंगा नदी की महिमा का वर्णन किया गया है ।

गंगा नदी सर्वदेवमयी, सर्वतीर्थमयी, सरित्श्रेष्ठा और महानदी तो है ही; परंतु 'सर्वपातकनाशिनी', उसकी प्रमुख पहचान है । जगन्नाथ पण्डित गंगा नदी से प्रार्थना करते हुए कहते हैं, 'जलं ते जम्बालं मम जननजालं जरयतु ।' अर्थात हे गंगामाता ! शैवाल (काई) एवं कीचड से युक्त आपका जल मेरे पाप दूर करे । (गङ्गालहरी, श्लोक २०)' प्रत्येक हिन्दू अपने जीवन में न्यूनतम एक बार पावन गंगा में स्नान करने की अभिलाषा रखता है । हिन्दू धर्म ने 'गंगास्नान' को एक धार्मिक विधि माना है । यह विधि सुलभता से कर पाने हेतु इस ग्रन्थ में 'गंगास्नानविधि' एवं 'गंगापूजनविधि' का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है ।

गंगा नदी के सर्व तट तीर्थस्थल बन गए हैं तथा वे हिन्दुओं के लिए अतिवन्दनीय एवं उपासना के लिए पवित्र सिद्धक्षेत्र ही हैं । उनकी महिमा भी इस ग्रन्थ में विशद की है । धर्माचार्यों ने यह सत्य स्वीकार किया है कि गंगा-दर्शन, गंगास्नान एवं पितृतर्पण के मार्ग से मोक्ष साध्य किया जा सकता है ।

गंगाजी के उपासक द्वारा की जानेवाली व्यष्टि व समष्टि साधना के विषय में इस ग्रन्थ में विस्तृत मार्गदर्शन किया है । श्री गंगादेवी के चरणों में प्रार्थना है कि ग्रन्थ पढकर सुरसरिता गंगाजी के प्रति श्रद्धालुओं का भाव जागृत हो तथा उन्हें भावपूर्वक गंगाजी की उपासना करने की प्रेरणा मिले ! – **संकलनकर्ता**